

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

१३१३२२५ [३७३]

ग्रंथ नाम

पंचीकरण.

विषय

म. वेदांत.

दरारी - ~~द. १४~~

रामदासी

द्वारत बोध प्रकाशक -



रामदासी

४३४/१ ११७

(1)  
॥ श्रीसद्गुरु सीतारामचंद्राय नमः ॥ नाभीपा ॥  
॥ सुनउन्मेशवृत्ती ॥ तेचीपराजाणीजेश्रो ॥  
॥ ती ॥ ध्वनीरूपपश्यती ॥ हृदइवसे ॥ १ ॥  
॥ कंठापासुननादजाला ॥ मध्यमावाचा ॥  
॥ बोलीजेत्याला ॥ उच्चारहोताअक्षराला ॥  
॥ वैखरिबोलीजे ॥ २ ॥ नाभीस्ठानीप ॥  
॥ रावाचा ॥ तोचीठावआंतःकर्णाचा ॥

॥१॥ (२)

॥ आंतः कर्ण पंचकाचा ॥ नीवाडाऐसा ॥ ३ ॥

॥ नीर्विकल्मीजे स्फुरण ॥ उगेच आसता ॥

॥ आठवण ॥ तेजाणावे आंतः कर्ण ॥ जा ॥

॥ णतीकळा ॥ ४ ॥ आंतः कर्ण आठवले ॥ पु ॥

॥ टेहोये नके से गमले ॥ करुन करुसे वाठ ॥

॥ ले ॥ तेची मन ॥ ५ ॥ संकल्पवी कल्पतेची ॥

॥ मन ॥ जेणे करीता आनुमान ॥ पुढेनी ॥

॥१॥

(2A)

॥ श्रयतेचीजाण॥रूपबुधीचे॥६॥करिन॥  
॥चीआथवानकरी॥ऐसानीश्रयोचीकरी॥  
॥तेचीबुधीहेआतरी॥बीवेकेजाणावी॥७॥  
॥जेवस्तुचानीश्रयकेला॥पुढेतेचींचितु॥  
॥लागला॥तेचीतबोलील्याबोला॥येथा॥  
॥र्थमानावे॥८॥पुढेकार्याचाआभीमान॥  
॥धरणे॥हेकार्यतोआगसकरणे॥पेशा॥

॥२॥ (३)

॥ कार्य सप्रवर्तिणे ॥ तोची आहंकार ॥ ९ ॥ ऐसे ॥

॥ अंतःकर्ण पंचक ॥ पंचवृत्ती तीळो नयेक ॥

॥ कार्य भागे प्रकारे पंचक ॥ वेग काले ॥ १० ॥

॥ जैसे पाचही प्राण ॥ कार्य भागे वेग काले ॥

॥ जाण ॥ नाहीत रीवा योचे लक्षण ॥ येकची ॥

॥ आसे ॥ ११ ॥ सर्वगी आनना भी समान ॥

॥ कंठी उदान गुदी आपान ॥ मुखी ना सीकी ॥

॥ प्राण ॥ नेमस्त जाणावा ॥ १२ ॥ बोलिले ॥

॥२॥

(3A)

॥ प्राणपंचक ॥ आता ज्ञानं ईंद्रिये पंचक ॥  
॥ श्रोत्रत्वचा चक्षुजीह्वानासीक ॥ ऐसे हे ज्ञा ॥  
॥ न ईंद्रिये ॥ १३ ॥ वाचा पाणी पाद सी स्न गुद ॥ १४ ॥  
॥ हे कर्म ईंद्रिये प्रसीध ॥ शब्द स्पर्श रू परस ॥  
॥ गंध ॥ ऐसे हे वीषय पंचक ॥ १५ ॥ आंतः कर्ण ॥  
॥ प्राणपंचक ॥ ज्ञान ईंद्रिये कर्म ईंद्रिये पंच ॥  
॥ क ॥ पाचवे विषये पंचक ॥ ऐसी पाच पंच ॥

॥ क ॥ १५ ॥

॥३॥ (५)  
॥ ऐसेहे पंच विसगुण ॥ मीकोन सुक्ष्म देह जाण ॥  
॥ मीकोन ॥ त्याचा कर्दम बोलीला श्रवण ॥ ॥  
॥ केले पा हीजे ॥ १६ ॥ अंत कर्ण व्यान श्रवण ॥  
॥ शब्द वीष योजाण आकाशाचा ॥ पुढे वीचा ॥  
॥ रवा योचा बोलीला आसे ॥ मन समान त्वचा ॥  
॥ पाणी ॥ स्पर्शरूप हा पवनी ॥ ऐसेहे आडा ॥  
॥ खेसा धुनी ॥ कोठा करावा ॥ १६ ॥ बुधी उदा ॥  
॥ नने ये न चरण ॥ रूप विष याचे दर्शनि ॥ ॥३॥



(5A)

- ॥ संकेत बोली लामन ॥ घालुन पाही जे ॥ १९ ॥  
॥ चीत आपान जिहा सी स्नि ॥ सरस वीषये आ ॥  
॥ पजाण ॥ ऐसे के ले निरुपण ॥ सशात्र मते ॥ २० ॥  
॥ ऐसाहा सूक्ष्म देह ॥ पाहाता हो ईजे नीः संदह ॥  
॥ येथे मन घालुन पाहे ॥ या सी चउ मजे ॥ २१ ॥  
॥ ऐसे सुक्ष्म देह बोली ले ॥ पुढे स्त्रु क निरोपीले ॥  
॥ आकाश पंचगुणिवर्तले ॥ कैसे स्त्रु की ॥ २२ ॥  
॥ काम क्रोध शोक मोहो भय ॥ हा पंच वि ॥

॥५॥ (5)  
॥ धाकाशाचा आन्वय ॥ पुढे पंचविध आ ॥  
॥ वायो ॥ नीरो पीली ॥ २३ ॥ चकणवकण प्रा ॥  
॥ सारण ॥ नीरो धन आणी आकोचन ॥ हे ॥  
॥ पंचष्वीधलक्षण ॥ प्रसंजनाचे ॥ २४ ॥  
॥ क्षुधात्रुषा आलसनी द्रामैथुन ॥ हे तेजा ॥  
॥ चैपंचविधगुण ॥ आता पुढे आपलक्ष ॥  
॥ ण ॥ नीरो पीले पा हीजे ॥ २५ ॥ शुक्लीतश्रो ॥  
॥ णीतलाकमुत्रश्वेद ॥ हा पंचषी धा ॥  
॥५॥

(5A)  
॥ पांचाभेद ॥ पुठे पृथ्वी विषद ॥ केके पाही ॥  
॥ जे ॥ २६ ॥ आस्ती मांस सत्वचाना ॥ डी रोम ॥ हे प्र ॥  
॥ थ्वीचे पंचवीध धर्म ॥ ऐसे स्वरूक देहाचे ॥  
॥ वर्म ॥ बोलीले आसे ॥ २७ ॥ पृथ्वी आपते ॥  
॥ वायो आकाश ॥ हे पांचाचे पंचवीस ॥ ऐ ॥  
॥ सेमी कोन स्वरूक देहास ॥ बोलीजेते ॥ २८ ॥  
॥ तीसरा देहकारण आ ज्ञान ॥ चौथा देह ॥  
॥ माहाकारण ज्ञान ॥ हे च्यारीह निर ॥

॥२॥ (६)  
॥ सितावीज्ञान ॥ पर ब्रह्मते ॥ २९ ॥ विचारे ॥  
॥ चौदेहावे गळे केले ॥ मीपणतयासरिसे ॥  
॥ गेले ॥ अनन्यआत्मनीवेदनजाले ॥ परब्रं ॥  
॥ ह्री ॥ ३० ॥ वीवेकेचुकलाजन्ममृत्यु ॥ नर ॥  
॥ दिहीसाधलेमहत्सु ॥ भक्तीयोगेकृत्यकृ ॥  
॥ ससार्थकजाले ॥ ३१ ॥ इतीश्रीपंच्यीकर्ण ॥  
॥ केलेचीकरावेवीवर्ण ॥ लोहाचेजालेसू ॥ २॥

॥ देह<sup>(6A)</sup>जाण ॥ जागृती स्वल्पसुषुप्तीपुर्ण ॥  
॥ तूर्याजाणावी ॥ १५ ॥ वीश्वतेजसप्राज्ञ ॥  
॥ प्रसंगात्माआभीमानी ॥ हृदयस्थानकं ॥  
॥ ठस्थन ॥ नेत्रस्थानसूर्धनी २ ॥ स्थूळ ॥  
॥ भोगप्रवीक्तभोग ॥ आनंदभोगआनं ॥  
॥ दावभासभोग ॥ पेसेहेचत्वारभोग ॥ चौ ॥  
॥ देहाचे ॥ ३ ॥ आकारउकारमकार ॥

॥ वर्ण<sup>(7)</sup> ॥ परी साचेन यागे ॥ ३२ ॥ हाही हृष्टांत ॥  
॥ घडेना ॥ परी साचेन परी सकरेवेना ॥ ३३ ॥  
॥ रणजाता साधूजना ॥ साधूची होईजे ॥  
॥ ३३ ॥ इती श्रीदासबोधे गुरु शिषसवादे ॥  
॥ चत्वारं देह निरुपणं नाम समास ॥ १ ॥  
॥ श्रीसद्गुप्तीतारामचंद्राय नमः ॥ स्तूक ॥  
॥ सूक्ष्मकारणमाहाकारण ॥ ऐसे हे चत्वार ॥

॥ ६ ॥

(7A)  
॥ देह जाण ॥ जागृती स्वल्पसुषुप्ती पूर्ण ॥ तू ॥  
॥ र्पीजाणावी ॥ १ ॥ वीश्वतेजसप्राज्ञ ॥ प्रत्य ॥  
॥ गाल्मा आभीमानी ॥ हृदयस्थ नकंठस्थ ॥  
॥ न ॥ नेत्रस्थान मूर्धनी ॥ २ ॥ स्थूक भोग ॥  
॥ प्रवीक भोग ॥ आनंद भोग आनंदावर्भौ ॥  
॥ स भोग ॥ ऐसेहे चत्वार भोग ॥ चौदेहाचे ॥ ३ ॥  
॥ आकार उकार मकार ॥ आर्धमात्रातो ॥  
॥ ईश्वर ॥ ऐश्या मात्रा चत्वार ॥ चौदेहाच्या ॥ ४ ॥

॥७॥ (४)  
॥ तमोगुणरजोगण ॥ सखगुणशुद्धसखगु ॥  
॥ ण ॥ ऐशेहेचत्वारगुण ॥ चौदेहाचे ॥ ५ ॥ क्रि ॥  
॥ याशक्तीद्रव्याशक्ती ॥ इच्छाशक्तीज्ञानाश ॥  
॥ क्ती ॥ ऐशाद्याचत्वारशक्ती ॥ चौदेहाव्य ॥ ६ ॥  
॥ ऐसीहेवतीसतत्त्व ॥ दोहीचीपन्नासतत्त्वे ॥  
॥ आवचीमीकोनव्याऐसीतत्त्वे ॥ आज्ञान ॥  
॥ आणीज्ञान ॥ ७ ॥ ऐसीहेतत्त्वेजाणावी ॥ ७ ॥



॥ जा णो नी मा ई क वो क र वा वी ॥ आप ण ॥  
॥ सा क्षी नि र सा वी ॥ य णे रि ती ॥ ६ ॥ सा ॥  
॥ क्षी घ्न णी जे ज्ञान ॥ ज्ञाने वो क र वा वे आ ॥ ७ ॥  
॥ ज्ञाने ॥ ज्ञाने आ ज्ञाना चे निर्शन देहा स ॥  
॥ सी से ॥ १ ॥ ब्रं ह्मां डी देह क ल्पी ले ॥ वी रा ॥  
॥ ट्ठि र ण्य गर्भ बो ली ले ॥ ते ही वी वे के ॥  
॥ निर्शल ॥ आ सा ज्ञाने ॥ १ ॥ आ स्ति मां ॥

॥६॥ (१)

॥ सर्वे चानाडिरो म॥ हे पृथ्वीचे गुणधर्म ॥  
॥ प्रत्यक्ष शरीरी हे वर्म ॥ शाधुन पाहावे ॥११॥  
॥ आत्मानामावी वैकरीता ॥ सारासार ॥  
॥ विचार पाहाता ॥ पंचभूताची माईकवा ॥  
॥ ती ॥ प्रचीत आली ॥१२॥ शुक्लीत श्रोणी ॥  
॥ तलाक मूत्र खेद ॥ हे आपाचे पंचभेद ॥  
॥ तत्रे समजौ न वीषद करु न घ्यावी ॥१३॥  
॥ क्षूधा वृषा आकस्य नीद्रामैथुन ॥ हे पा ॥६॥

॥ चहीते जाचे गुण ॥ त्यात त्याचे निरूपण ॥  
॥ केले पाहीजे ॥ १४ ॥ चकण व कण प्रासा ॥  
॥ रण ॥ निरोधन आणि आकोचन ॥ हे पा ॥  
॥ चही वायोचे गुण ॥ १५ ॥ काम क्रोध शो ॥  
॥ कर्मो हे भय ॥ हा आकाशाचा परिणाम ॥  
॥ हे वीवरत्ना वीणकार ॥ समजो जाणे ॥ १६ ॥  
॥ आसो ऐसे स्थूळ शरीर ॥ पंचवीसतत्वाचा ॥  
॥ वीस्तार ॥ आता सुक्ष्म देहाचा विचार ॥

॥९॥ (१०)  
॥ बोली जे ल ॥ १७ ॥ आंतः कर्ण मन बुद्धी चीत ॥  
॥ आहंकार ॥ ओकाश पंचकाचो वीचार ॥  
॥ पुढे वायो नीरोतर ॥ हाउन ऐका ॥ १८ ॥  
॥ व्यान समान उदान ॥ प्राण आणि आपान ॥  
॥ ऐसे हे पाच हि गुण ॥ वायो तत्वाचे ॥ १९ ॥  
॥ श्रोत्र त्रय चाचक्षु जीका घ्रण ॥ हे पाच ही तेजा ॥  
॥ चे गुण ॥ आता आपसावधान ॥ हाउन ऐका ॥  
॥ २० ॥ वाचा पाणी पाद सीस गुद ॥ हे आपाचे ॥  
॥ ९ ॥

॥ गुणप्रसिद्ध ॥ आता पृथ्वी विषद ॥ नीरो ॥  
॥ पीली ॥ २१ ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंध ॥ हे पृ ॥  
॥ थ्वीचे गुणविषद ॥ एसे हे पंचवीसतल्ले ॥  
॥ ६ ॥ सूक्ष्मदेहाचे ॥ २२ ॥ ईती श्रीदासबोधे ॥  
॥ गुरुसीषसंवादे ॥ तनुचतुष्टये नीरुपणं ॥  
॥ नामसमास ॥ नवम ॥ ९ ॥ श्रीसीताराम ॥  
॥ चंद्रार्पणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ ७ ७ ॥

(१०A)

119011

(1)

॥प-कीकरणसमाप्ता॥



119011



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com